National Seminar [Hybrid Mode] on "Teacher Education and Professional Development: A NEP 2020 Perspective" Dt. 21 & 22 Feb 2025 With e-ISSN 2394-8426 & International Impact Factor 8.357
DOI link - https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2501I02S01V13P0015

शिक्षक के लिए सहायक, सकारात्मक और सहयोगात्मक शिक्षण वातावरण के निर्माण का महत्व

डॉ. त्रिवेणी साहू
सहायक प्राध्यापक
शिक्षा विभाग
नेताजी सुभाष महाविद्यालय
बेलभाठा, अभनपुर, रायपुर (छ.ग.)

सार
सकारात्मक शिक्षा तब स्पष्ट होती है जब सभी छात्र, शिक्षक और कर्मचारी सुरक्षित, स्वस्थ, देखभाल करने वाले और पोषण करने वाले वातावरण का अनुभव करते हैं। यह एक सतत प्रक्रिया है और यद्यपि यह मांग करती है, यह पुरस्कृत भी करती है। इस वातावरण को सभी के जन्मजात मूल्य और गरिमा पर जोर देना चाहिए और यह सुनिश्चित करके पहचानना चाहिए कि समानता का अभ्यास किया जा रहा है जो सुनिश्चित करता है कि शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया सभी के लिए इंटरैक्टिव, गतिशील और प्रगतिशील है। जब समानता एक सकारात्मक सीखने के माहौल को बढ़ावा देती है, तो छात्रों के साथ–साथ शिक्षक भी अपनी क्षमता को अधिकतम करने के लिए बाहरी और आंतरिक रूप से प्रेरित और ऊर्जावान होते हैं। वे अपने सीखने की जिम्मेदारी लेने और अन्य छात्रों की सहायता करने की अधिक संभावना रखते हैं जिन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। यह भौतिक वातावरण छात्रों को सहज, सुरक्षित और संरक्षित महसूस कराता है जो हिंसा और अवैध पदार्थों से मुक्त होना चाहिए। इसके अलावा, कक्षाओं में पर्याप्त रोशनी, हवा का उचित संचार और अनावश्यक शोर से मुक्त होना चाहिए। इसी तरह, स्कूलों को एक ऐसा वातावरण बनाना चाहिए जो शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया के लिए सामाजिक रूप से फायदेमंद हो। छात्रों और वयस्कों को अनुशासन मैट्रिक्स और उसके परिणामों से परिचित होना चाहिए। स्कूल के माहौल में उन्हें सीखने और खुद को अभिव्यक्त करने के लिए भावनात्मक रूप से तैयार महसूस करना चाहिए। इस संबंध में, कक्षा में निरंतर और नियमित प्रेरणा छात्रों को लचीला और स्वतंत्र शिक्षार्थी बनने के लिए प्रोत्साहित कर सकती है। इस प्रकार, उन्हें चुनौतियों से नहीं डरना चाहिए बल्कि उन्हें विकास और विकास के अवसरों के रूप में देखना चाहिए। जब सकारात्मक वातावरण होता है, तो छात्र अपनी जरूरतों, भावनाओं, लक्ष्यों, आदर्शों और आकांक्षाओं को ठीक से व्यक्त करने में सक्षम होते हैं।
कुंजी शब्द – सकारात्मक, सीखना, पर्यावरण, विविधता, समानता, वातावरण

परिचय
क्या सकारात्मक शिक्षण वातावरण बनाने में कोई योग्यता है? सकारात्मक शिक्षण वातावरण वास्तव में क्या है? इसमें वास्तव में क्या शामिल है? क्या इसमें विविधता समानता और समानता शामिल है? इससे किसे लाभ होता है? यह ध्यान देने योग्य है कि प्रकाशित शोध ने निर्विवाद रूप से संकेत दिया है कि इस विषय के बारे में जानकारी की कमी है। पेशेवर साहित्य के समर्थन से, इस शोधपत्र ने सकारात्मक शिक्षण वातावरण और कक्षाओं के महत्व को रेखांकित किया। इस गैर–अनुभवजन्य शोध ने कई शोध पत्रों, जर्नल लेखों और पुस्तकों की विस्तृत समीक्षा प्रदान की। एक महत्वपूर्ण शोध पद्धति ने विभिन्न पत्रों की तुलना की जो सीधे इस विषय से संबंधित हैं। कई शिक्षक दृढ़ता से मानते हैं कि सकारात्मक शिक्षण स्थान बनाना अनिवार्य है। सकारात्मक शिक्षण वातावरण अक्सर संपूर्ण शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया को बढ़ाता और बढ़ावा देता है। इसलिए, यह अनिवार्य है कि हर कोईः शिक्षक, पेशेवर और नीति निर्माता, सकारात्मक शिक्षण वातावरण बनाने के महत्व पर विशेष ध्यान दें और विचार करें। यद्यपि यह प्रक्रिया चुनौतीपूर्ण और मांग वाली है, लेकिन यह दृढ़ता से सुझाव दिया जाता है कि सभी नागरिक सकारात्मक शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देने और प्रोत्साहित करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें।

सीखने के वातावरण की विशेषताएँ
मदन एट अल. (2019) ने माना कि सकारात्मक और विकास को बढ़ावा देने वाले शिक्षण वातावरण सीखने के लिए महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने आगे कहा कि सकारात्मक भावनाएँ और सकारात्मक आत्म–चर्चा सीखने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण हैं और शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया को बढ़ाती हैं। इसी तरह (चेन एट अल., 92018)य पेकरुन एट अल. (2017) ने पुष्टि की कि यह शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया के दौरान मेटाकॉग्निटिव स्व–नियमन को उत्तेजित करता है। इस प्रकार, सकारात्मक शिक्षण वातावरण बनाना आवश्यक है। फ्रेनजेल एट अल. 92007) और सैंडिलोस एट अल. (2017) ने जोर देकर कहा कि ये वातावरण बच्चों को अकादमिक और सामाजिक रूप से उच्च स्तर पर प्रदर्शन करने की अनुमति देते हैं। इसके अलावा, बच्चे शारीरिक और मनोवैज्ञानिक रूप से सुरक्षित महसूस करते हैं और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित होते हैं। शारीरिक रूप से सुरक्षित होना तब स्पष्ट होता है जब वातावरण अनावश्यक अव्यवस्था और खतरों जैसे रसायनों या टूटे हुए कांच या किसी अन्य खतरे से मुक्त हो। मनोवैज्ञानिक रूप से सुरक्षित होने के लिए, बच्चों को अपने सहपाठियों या अपने शिक्षकों द्वारा अपमानित या परेशान किए जाने के डर के बिना प्रदर्शन करने में सक्षम होना चाहिए। उजैर–उल–हसन एट अल। (2017) का दृढ़ विश्वास था कि उन्हें यह महसूस करने की आवश्यकता है कि वे अपने साथियों के साथ कक्षा में हैं, और उनका सामाजिक मूल्य या प्रासंगिकता है। कोहेन और हूपर्ट (2018) ने कहा कि जब बच्चे सराहना महसूस करते हैं और मूल्यवान होने पर, वे सीखने के लिए प्रेरित और सक्रिय होते हैं और इसलिए अनुभूति में वृद्धि होती है। इससे विविधता, समानता और समावेशन को बढ़ावा मिलता है। विविधता, समानता और समावेशन सीखने के वातावरण का एक अभिन्न अंग हैं। कॉस्टली

एट अल. (2021) ने माना कि सामूहिक विविधता के रूप में समानता और समावेशन मूल रूप से गैर–पक्षपाती उपचार और सभी के लिए समान अवसर से संबंधित है। इसका एक प्रमुख उद्देश्य प्रत्येक वातावरण में पूर्वाग्रह को खत्म करना है। कोर्सिनो और फुलर (2021) ने परिकल्पना की कि विविधता मनुष्यों के बीच मतभेदों को गले लगाती है। उनमें से कुछ में नस्ल, जातीयता, लिंग, यौन अभिविन्यास, आयु, सामाजिक वर्ग, शारीरिक क्षमता या गुण, धार्मिक या नैतिक मूल्य प्रणाली, राष्ट्रीय मूल और राजनीतिक विश्वास शामिल हैं। कॉस्टली एट अल. (2021) ने आगे कहा कि विविधता दूसरों में मतभेदों को पहचानती है और उनका जश्न भी मनाती है। इसलिए, एक विविध वातावरण में, यह महत्वपूर्ण है कि पृष्ठभूमि और मानसिकता की एक विस्तृत श्रृंखला हो, जिसे मैंने मान्य किया है जो रचनात्मकता और नवाचार को मंजूरी देती है। एनी ई केसी फाउंडेशन (2021) ने समानता को निष्पक्ष और निष्पक्ष होने की स्थिति के रूप में परिभाषित किया है। समानता मुख्य रूप से पूरे व्यक्ति के विकास और विकास से संबंधित है और यह सुनिश्चित करती है कि सभी के साथ समान व्यवहार किया जाए। कॉस्टली एट अल। (2021) ने आगे जोर देकर कहा कि व्यक्तियों या व्यक्तियों के समूहों के साथ निष्पक्षता से व्यवहार किया जाना चाहिए। एनी ई केसी फाउंडेशन (2021) ने पुष्टि की कि समावेशन वास्तव में सभी को एक दिए गए ढांचे में शामिल करता है और लोगों को अपनेपन का एक बड़ा एहसास देता है। कोर्सिनो और फुलर (2021) ने यह भी उल्लेख किया कि समावेशन लोगों के जन्मजात मूल्य और गरिमा को पहचानता है और उन्हें अपनी पूरी क्षमता को अधिकतम करने के लिए सशक्त, प्रेरित और ऊर्जा प्रदान करता है। कॉस्टली एट अल। (2021) का मानना था कि समावेश का मतलब एक ऐसा उपयुक्त वातावरण बनाना है जहाँ हर कोई स्वागत और मूल्यवान महसूस करे। समावेशी वातावरण तब बनाया जा सकता है जब लोग अपने अचेतन पूर्वाग्रहों के बारे में अधिक जागरूक हों और उन्हें प्रबंधित करना सीख लें। कॉर्बेट एट अल। (2021) ने दृढ़ता से सुझाव दिया कि समावेशी वातावरण और शैक्षणिक संस्थानों की संरचना महत्वपूर्ण है क्योंकि वे सुनिश्चित करते हैं कि सभी छात्र स्वागत और मूल्यवान महसूस करें। फ्यूएंटेसेट अल। (2021) का मानना था कि कुछ देशों में समावेश अभी भी मौजूद नहीं है। नतीजतन, यह अल्पसंख्यक समूह के छात्रों (स्टीन और एंड्रॉटी, 2016) के बीच अलगाव और खराब शैक्षणिक प्रदर्शन की भावनाओं को बढ़ावा देता है।

सकारात्मक वातावरण के घटक जेंगिलोव्स्की एट अल. (2023) ने संकेत दिया कि शिक्षकों के लिए घनिष्ठ और तत्काल संबंध बनाने के लिए ''हम'' जैसे समावेशी सर्वनामों का उपयोग करना महत्वपूर्ण है। अपनेपन की गहरी भावना को बढ़ावा देना, समाज–रचनात्मक दृष्टिकोण को रेखांकित करता है। जेंगिलोव्स्की एट अल. (2023) ने आगे बताया कि सहयोगात्मक शिक्षण वातावरण अक्सर बातचीत और सक्रिय भागीदारी का समर्थन करते हैं, चाहे समकालिक रूप से या अतुल्यकालिक रूप से (जेंगिलोव्स्की 2023)। अल्परट एट अल. (2018) ने कहा कि समावेशी शिक्षण में विविधता और समानता भी शामिल है और यह सीखने और सीखने के अनुभव को समृद्ध करता है। बहुत बार विविधता शिक्षकों और शिक्षार्थियों को सामाजिक और सांस्कृतिक अंतरों को जोड़ने और उनकी सराहना करने के अवसर प्रदान करती है। एक दूसरे की संस्कृति की पहचान डिजिटल कलाकृतियों या धार्मिक और राष्ट्रीय त्योहारों की प्रस्तुतियों के रूप में की जा सकती है, जिससे आभासी वातावरण में संस्कृति को साझा करने और सम्मान करने की अनुमति मिलती है। ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी (2023) ने कहा कि पाठ्यक्रम सामग्री के भीतर सकारात्मक भाषा का उपयोग जो असंख्य पहचानों का प्रतिनिधित्व करता है, समावेशिता को बढ़ावा देता है। यह जरूरी है कि शिक्षक ऐसी पठन और सीखने की सामग्री चुनें जो विविध पहचानों और दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करती हो। उदाहरण के लिए, वे पाठ्यक्रम सामग्री चुन सकते हैं जो शिक्षार्थियों की जातीय और लैंगिक पहचान को उजागर करती है। इस तरह छात्र इसे पहचान सकते हैं और इससे संबंधित हो सकते हैं। शिक्षक अक्सर विविधता, समानता और समावेश को और विस्तृत करने के लिए केस स्टडी, विगनेट्स और वीडियो रख सकते हैं। यह सभी सामाजिक समूहों के लिए आपसी सम्मान विकसित करने में मदद करता है और शिक्षार्थियों को अपने रूढ़िवादी और कट्टरपंथी दृष्टिकोणों को साझा करने की अनुमति देता है जो समावेशी शैक्षिक जुड़ाव को बढ़ावा देते हैं। वे छात्रों को ऑनलाइन कक्षा में नियमों के बारे में सहमति बनाने के लिए भी प्रेरित कर सकते हैं और उन्हें अपने सामाजिक और भावनात्मक डोमेन का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। विभिन्न पृष्ठभूमि के विभिन्न लेखकों की सामग्री का उपयोग करना महत्वपूर्ण है। शिक्षकों को कम प्रतिनिधित्व वाले और अल्पसंख्यक समूहों से उचित जानकारी का उपयोग करना चाहिए ताकि छात्रों को जुड़ाव और अपनेपन की भावना महसूस हो। रत्नायका (2021) ने कहा कि इस घटना के लिए कई योगदान कारक जिम्मेदार हैं। उनमें से कुछ में परिवार की निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति और युवा अफ्रीकी पुरुषों के लिए औपचारिक शिक्षा का सामान्य रूप से कम मूल्यांकन शामिल है। इसलिए, शिक्षकों को सिस्टम के अंतर्निहित पूर्वाग्रहों पर विशेष ध्यान देना चाहिए और रूढ़िवादिता का सहारा लिए बिना युवा अफ्रीकी पुरुषों को सशक्त बनाने के तरीके खोजने चाहिए। पाठ्यक्रम सामग्री के भीतर विभिन्न क्षेत्रों में अफ्रीकी पुरुषों की सफलता की कहानियों को उजागर करना निश्चित रूप से इस हाशिए के समूह को सशक्त बना सकता है। पाठ्यक्रम तत्वों के विकास में छात्रों के लिए पहुँच के स्तरों पर विचार किया जाना चाहिए। यूनिवर्सल डिजाइन फॉर लर्निंग, (अल्पर्ट एट अल. (2018), एक उपयुक्त मार्गदर्शिका है जो शिक्षकों और पाठ्यक्रम डेवलपर्स को विविध शिक्षार्थियों की जरूरतों और अक्षमताओं की योजना बनाने और उन्हें पूरा करने में मदद करती है। यूडीएल के तीन सिद्धांतों में प्रतिनिधित्व, जुड़ाव और कार्रवाई और अभिव्यक्ति शामिल हैं। समावेशी शिक्षा सभी शिक्षार्थियों के लिए सुलभ हो, यह सुनिश्चित करना सामाजिक न्याय और मानवाधिकारों का मुद्दा है। इसलिए, समावेशी सीखने के माहौल में पाठ्यक्रम वितरण के भौतिक और संज्ञानात्मक पहलुओं पर विचार किया जाता है। डिजिटल सीखने के माहौल में, वेब सामग्री एक्सेसिबिलिटी दिशानिर्देशों का उपयोग उन मानकों को प्रदान करता है जिन्हें पाठ्यक्रम सामग्री और इंटरफेस में शामिल किया जाना चाहिए। इंटरनेट एक्सेसिबिलिटी ब्यूरो (2019) के अनुसार वेब सामग्री बोधगम्य, संचालन योग्य, समझने योग्य और मजबूत (POUR) होनी चाहिए। बोधगम्य के संदर्भ में, इसे किसी भी गैर–पाठ्य सामग्री के लिए पाठ विकल्प प्रदान करना चाहिए, और इसे सरल लेआउट का उपयोग करके अनुकूलनीय होना चाहिए।

संचालन संबंधी दिशा–निर्देशों में कीबोर्ड को सुलभ बनाना, यह सुनिश्चित करना शामिल है कि डिजाइन दौरे और शारीरिक प्रतिक्रियाओं को उत्तेजित न करे और वेब इंटरफेस को नेविगेट करना आसान हो।

पर्याप्त शिक्षण कक्षाएँ

यह अनिवार्य है कि शिक्षक और छात्र तथा अभिभावकध्महत्वपूर्ण अन्य लोग एक सतत प्रक्रिया में संलग्न हों। शिक्षा में सकारात्मक संबंधों का निर्माण और स्थापना महत्वपूर्ण है और इसके लिए उचित और सार्थक संचार की आवश्यकता होती है, जिसमें छात्रों को जानना शामिल हैः उनके विभिन्न व्यक्तित्व और विविध स्वभाव। यह गतिविधि व्यक्तिगत रूप से और समूहों में दोनों तरह से पूरी की जा सकती है। इसके अलावा, शिक्षकों को हमेशा सकारात्मक पहलुओं पर प्रकाश डालना चाहिए और नकारात्मक पहलुओं का उपयोग आगे की वृद्धि और विकास के अवसरों के रूप में करना चाहिए। शिक्षक अपनेपन की गहरी भावना को बढ़ावा देने और छात्रों को देखभाल करने वाली कक्षाएँ स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करने का प्रयास कर सकते हैं (बर्गिन, 2016)।शिक्षकों को अत्यंत सतर्क रहना चाहिए और सभी छात्रों की आवाजों और कथनों को ध्यान से और सोच–समझकर सुनना चाहिए। कक्षा के नियमों और विनियमों को सावधानीपूर्वक रेखांकित किया जाना चाहिए। छात्रों को उन्हें समझना चाहिए और जब उनका पालन नहीं किया जाता है तो परिणामों के बारे में पता होना चाहिए। थॉर्नटन (2018) इस बात से सहमत थे कि छात्रों के बीच दुर्व्यवहार शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया और स्कूल के समग्र माहौल पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। इस प्रकार, कक्षा के लिए नियम बनाते समय, यह दृढ़ता से अनुशंसा की जाती है कि शिक्षक नकारात्मक शब्दों का उपयोग करने से बचें। जहाँ तक संभव हो, शिक्षकों को पढ़ाते समय सकारात्मक भाषा का उपयोग करने का प्रयास करना चाहिए। नीतियों, दिशानिर्देशों और अपेक्षाओं को मैत्रीपूर्ण और रचनात्मक भाषा में संप्रेषित किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, ''अन्य छात्रों का अनादर न करें'' कहने के बजाय, वे उल्लेख कर सकते हैंः ''कृपया सभी छात्रों का सम्मान करें।'' कथनों को उकेरने का यह सकारात्मक तरीका महत्वहीन लग सकता है लेकिन अक्सर एक बड़ा अंतर पैदा करता है (रस्टिकस एट अल., 2023)। सबसे बढ़कर यह सभी के लिए बिना शर्त सकारात्मक सम्मान को दृढ़ता से व्यक्त करता है। सकारात्मक सुदृढीकरण आवश्यक है और अक्सर आंतरिक प्रेरणा का निर्माण करता है और छात्रों के बीच सकारात्मक माहौल को बढ़ावा देने में मदद करता है। यहाँ दो बेहतरीन रणनीतियाँ इस्तेमाल की जा सकती हैं। रुस्टिकस एट अल. (2023) ने पुष्टि की कि चुनौतियों के बीच भी छात्रों को प्रोत्साहित करना हमेशा उपयोगी होता है। सीखने का जश्न मनाने के लिए पर्याप्त समय समर्पित किया जा सकता है जिससे सकारात्मकता को बल मिलता है। यह समझना महत्वपूर्ण है कि हर कक्षा अद्वितीय है क्योंकि छात्रों के अनुभव अलग–अलग होते हैं।

समावेशी कक्षाएँ

यूनिसेफ (2017) ने जोर देकर कहा कि समावेशी शिक्षा मूल्यों, विचारों और प्रथाओं का एक संयोजन है जो सभी छात्रों को अधिक प्रभावी और सार्थक शिक्षा प्रदान करती है। समावेश सुनिश्चित करता है कि सभी छात्रों को समान अवसर मिले और वे सुरक्षित वातावरण में सीखें। यूनिसेफ (2017) ने आगे उल्लेख किया कि समावेश छात्रों के अद्वितीय योगदान की सराहना करता है। जब समावेशी कक्षाएँ पूरी तरह कार्यात्मक होती हैं तो छात्र एक साथ रहते हैं और एक साथ बढ़ते हैं। यूनिसेफ (2019) ने पुष्टि की कि विभिन्न पृष्ठभूमि के छात्रों, जिनमें अक्सर विशेष आवश्यकताओं और विकलांगता वाले लोग, महिलाएँ, जोखिम में रहने वाले छात्र और जातीय अल्पसंख्यकों के सदस्य शामिल होते हैं, को समावेशी और सुरक्षित कक्षाओं में अध्ययन करना चाहिए। डाल्टन (2017) के अनुसार अंतर–सांस्कृतिक संवेदनशीलता (भावात्मक), अंतर–सांस्कृतिक क्षमता (व्यवहार) और अंतर–सांस्कृतिक जागरूकता (संज्ञानात्मक) सभी सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र का समर्थन करते हैं और विभिन्न शैक्षिक संदर्भों में प्रभावी शिक्षण के लिए आवश्यक हैं। समावेशी शिक्षा के लिए शिक्षा रणनीतियों में छात्रों की पहचान और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के साथ–साथ समुदायों के विशेष संदर्भों पर भी जोर दिया जाना चाहिए। डाल्टन (2017) ने यह भी पुष्टि की कि कक्षा में व्यक्तियों द्वारा लाई जाने वाली सांस्कृतिक क्षमता का लाभ उठाना समावेश का एक मुख्य लक्ष्य है। समावेशी प्रथाओं का उपयोग करने वाले शिक्षकों द्वारा सभी छात्रों को स्वीकार किया जाता है और सभी सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टिकोणों को पाठ्यक्रम गतिविधियों में विचार करने का मौका दिया जाता है (डाल्टन, 2017)। यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षक कक्षाओं में विविधता, समानता और समावेश का वातावरण स्थापित करें। उन्हें पाठ्यचर्या संसाधनों में रूढ़िवादिता को खत्म करना चाहिए और समानता को बढ़ावा देने वाले साहित्य को शामिल करना चाहिए। यह छात्रों को ढालकर, उनका समर्थन करके और उनकी पुष्टि करके किया जा सकता है, जिससे उन्हें भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।

शिक्षकों को अपनी खुद की मान्यताओं और मान्यताओं को प्रतिबिंबित और चुनौती देनी चाहिए। समावेश का माहौल बनाने के लिए, उन्हें अपने छात्रों को जानना चाहिए और उन्हें हमेशा उनके नाम से संबोधित करना चाहिए। इसके अलावा, वे उनकी उपस्थिति को स्वीकार कर सकते हैं, उनके दृष्टिकोण को महत्व दे सकते हैं और उन्हें हमेशा अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। सुसंगत और सार्थक संचार बनाए रखना और छात्रों को खुद को व्यक्त करने और यहां तक कि असहमत होने की स्वतंत्रता देना महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, शिक्षक पाठ योजनाओं में विविधता समानता और समावेश के सिद्धांत को शामिल कर सकते हैं। सबसे बढ़कर, शिक्षकों को सभी छात्रों के अनुभवों और आवाजों की सराहना करनी चाहिए और शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में गैर–निर्णयात्मक होना चाहिए। छात्रों की आवाज तब और बढ़ जाती है जब छात्र स्वतंत्र सोच को बढ़ावा देते हैं। जूलियन (2021) के अनुसार विविध आवाजें और विविध अनुभव निश्चित रूप से विविधता, समानता और समावेशन में मौजूद अंतर को कम कर सकते हैं। इसके अलावा, उनकी आवाजें और अनुभव शिक्षा में समावेशन के लिए बेहतर नीति निर्माण के लिए सहायक हो सकते हैं। समय पर प्रतिक्रिया अक्सर छात्रों को उनके प्रदर्शन को अधिकतम करने और उनके सीखने की जिम्मेदारी संभालने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करती है। एर्टमर एट अल। (2013) ने पुष्टि की कि जब भी समूह कार्य और परियोजनाएँ होती हैं, तो छात्र अधिक शामिल, उत्साहित और उत्साही हो जाते हैं। यह उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करता है, जिसके परिणामस्वरूप साथियों के बीच सहयोग को बढ़ावा मिलता है और अक्सर छात्रों को परीक्षाओं और दुनिया या काम के लिए बेहतर तरीके से तैयार होने में सहायता करता है (जूलियन 2021)। जब छात्रों को लगता है कि उनकी सराहना की जा रही है और विविधता, समानता और समावेश की बाधाएं खत्म हो गई हैं, तो छात्र

बेहतर प्रदर्शन करते हैं। जूलियन (2021) के अनुसार शिक्षा पूरी तरह से अलग आयाम लेती है क्योंकि छात्र अधिक स्वायत्त हो जाते हैं। एर्टमर एट अल। (2013) ने पुष्टि की कि छात्र स्व–प्रेरित, रचनात्मक, रचनात्मक, स्व–निर्देशित और स्वतंत्र शिक्षार्थी भी बनते हैं। फ्यूएंटेस एट अल। (2020) ने शिक्षकों के लिए अलग–अलग विचार प्रस्तावित किए, जिनका उपयोग तकनीकी रूप से उन्नत शिक्षा सेटिंग के भीतर किया जा सकता है। उनमें से चार विचार नीचे दिए गए हैं। रिफ्लेक्सिविटी में संलग्न हों: शिक्षकों को यह सोचने के लिए प्रेरित किया जाता है कि उनकी अपनी सामाजिक–सांस्कृतिक स्थितियाँ और इतिहास उनके पाठ्यक्रम प्रयासों में समावेशिता का समर्थन करने और उसे संबोधित करने के तरीके को कैसे प्रभावित कर सकते हैं। इस प्रकार, वे इस उत्कृष्ट अभ्यास के उदाहरण के रूप में अपनी स्वयं की सामाजिक प्रोफाइल और ठिकाने प्रकाशित कर सकते हैं (फ्यूएंटेस एट अल., 2020)। विविधता–केंद्रित दृष्टिकोण अपनाएँ: शिक्षकों के लिए एक प्रमुख व्यावसायिक गतिविधि के रूप में ''सांस्कृतिक लेंस'' के उपयोग की सलाह दी जाती है। दूसरे शब्दों में, व्यवहार पर संस्कृति और संबंधित विविधता कारकों की प्रासंगिकता और प्रभाव को देखते हुए, संकाय शुरू से ही उनके प्रभाव और प्रभाव की जांच कर सकते हैं और अक्सर उनकी प्रासंगिकता पर विचार कर सकते हैं। ये पहल पाठ्यक्रम विकसित करने की ''विविधता–केंद्रित'' पद्धति का समर्थन करती हैं (फ्यूएंटेस एट अल., 2020)। पाठ्यक्रम विवरण में विविधता को उजागर करें और अंतरसंबंध को स्वीकार करें: अपने पाठ्यक्रम बनाते समय, प्रोफेसरों को अक्सर पाठ्यक्रम सूची से पाठ्यक्रम विवरण शामिल करने की सलाह दी जाती है। संकाय को पाठ्यक्रम विवरण में समावेशी संबंधित विवरणों को देखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। साथ में वे समावेशी शिक्षा से जुड़ी विशेषताओं को समन्वित करने के लिए अभिसरण और सहयोग करते हैं। प्रत्येक घटक समावेशी, दीर्घकालिक परिवर्तन लाने के लिए छात्रों द्वारा किए गए प्रयासों के लिए महत्वपूर्ण है (मैकमास्टर, 2014)। यह तर्क दिया जा सकता है कि अच्छे संबंध बनाना शायद सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि समावेश का मूल अनिवार्य रूप से एक दूसरे के साथ बातचीत करने के बारे में चिंतित है। दूसरों के बारे में पूरी तरह से जागरूक होना और उन्हें सराहना का एहसास कराना महत्वपूर्ण है (मैकमास्टर, 2014)

आदर्श कक्षाएँ

सैंडिलोस एट अल. (2017) ने स्पष्ट रूप से कहा कि सकारात्मक कक्षाओं को आत्म–सम्मान और सकारात्मक आत्म–सम्मान को बढ़ावा देना चाहिए। हालाँकि, सकारात्मक वातावरण की यह धारणा एक बहुआयामी निर्माण है और इसे सटीक रूप से परिभाषित करना जटिल है। फिर भी, नायर एट अल. (2018) ने सुझाव दिया कि: यह जीवन की एक अच्छी गुणवत्ता को दर्शाता है। इसमें कई आयाम शामिल हैं: सामाजिक, राजनीतिक, बौद्धिक, धार्मिक और शैक्षिक। दूसरी ओर, सुकरान (2020) का मानना था कि सार्वभौमिक मूल्य अत्यंत महत्वपूर्ण हैं और सकारात्मक कक्षाएँ बनाने में एक अभिन्न अंग हैं। मूल्य प्रणाली आवश्यक है क्योंकि प्रेम, सम्मान और सहिष्णुता के बिना एक शांतिपूर्ण स्कूल का निर्माण संभव नहीं है (सुकरान, 2020)। शिक्षकों और छात्रों की कुछ अपेक्षाएँ और जरूरतें होती हैं। शिक्षकों के लिए सबसे बुनियादी जरूरत यह है कि वे मूल्यवान महसूस करें और छात्र ऐसी कक्षाओं की सराहना करें जो सकारात्मकता को उजागर करने के लिए स्वतंत्र हों। प्रोडिजी (2022) का मानना था कि प्राथमिक लक्ष्यों में से एक ऐसी कक्षाएँ बनाना और बनाए रखना है जो विशेष रूप से छात्रों के बीच सफलता को बढ़ावा दें। अरियानी एट अल। (2021) ने आगे कहा कि शिक्षकों को दूसरों को अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए अक्सर प्रेरित, प्रोत्साहित और निगरानी करनी चाहिए। इस तरह, वे ऐसी कक्षाएँ बनाना जारी रखते हैं जहाँ शांति और स्थिरता स्पष्ट हो। रहमावती एट अल। (2020) ने यह भी कहा कि शिक्षण और सीखने का संचालन शांतिपूर्ण कक्षा में किया जाना चाहिए। सकारात्मक कक्षाएँ स्थापित करना सरल नहीं है। यह एक कठिन, जटिल और जटिल प्रक्रिया है। कक्षा में सकारात्मक शिक्षण वातावरण बनाने के लिए केवल पोस्टरों से कक्षाओं को सजाने से कहीं अधिक की आवश्यकता होती है। यह वास्तव में छात्रों और सहकर्मियों की विविध आवश्यकताओं की सराहना, समझ और समर्थन करने का प्रतीक है। यह कक्षा में नियम स्थापित करके पूरा किया जा सकता है। ये नियम एक स्वस्थ शिक्षण कक्षा के लिए माहौल तैयार करते हैं जहाँ छात्रों को पता होता है कि उनसे क्या अपेक्षित है। यह संरचना छात्रों को सुरक्षित और सहज महसूस कराती है और इस प्रकार सकारात्मक कल्याण को बढ़ावा देती है। जब छात्र कक्षाओं में सुरक्षित महसूस करते हैं, तो वे चुनौतियों का सामना करने से नहीं डरते। इसके अलावा, वे उन्हें नकारात्मक के रूप में नहीं देखते बल्कि उनका उपयोग आगे की वृद्धि और विकास के लिए करते हैं। छात्र और शिक्षक दोनों सकारात्मक परिस्थितियों में एक–दूसरे के साथ बातचीत करने के लिए अधिक व्यस्त और उत्साहित होते हैं। छात्रों के सकारात्मक शिक्षण कक्षाओं में सफल होने की संभावना अधिक होती है जहाँ उन्हें अपनेपन का एहसास होता है। यह उल्लेख किया जाना चाहिए कि कोई एकल या संपूर्ण शिक्षण कक्षा नहीं होती है। माइंड–मैपिंग तकनीकी उपकरण जैसे माइंड मिस्टर, बुबल.यूएस और माइंडोमो निश्चित रूप से लाभकारी हो सकते हैं और सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी निर्देशों को बढ़ावा देने में सहायता कर सकते हैं। वे अंतर–सांस्कृतिक क्षमता को भी विकसित और विकसित कर सकते हैं। मूर एट अल। अल. (2017) ने दृढ़ता से वकालत की कि इस गतिशील प्रक्रिया के माध्यम से छात्र अपनी धारणाओं और पूर्वधारणाओं को प्रभावित करने वाले सांस्कृतिक पैटर्न पर विचार कर सकते हैं, उनकी तुलना और दूसरों के साथ तुलना कर सकते हैं, और सोचने और काम करने के नए तरीकों को सशक्त रूप से अपना सकते हैं।

शिक्षार्थियों को गैर–पारंपरिक तरीकों से अपने सीखने को साझा करने के लिए संवाद करने में मदद करें (पृष्ठ 12)। इसके अतिरिक्त, वैकल्पिक कीबोर्ड ैम्छक जैसे मोटर विकलांगता और दृश्य हानि वाले शिक्षार्थियों को जानकारी व्यक्त करने की अनुमति देते हैं, ैम्छक छात्रों को असाइनमेंट पूरा करने की अनुमति देने के लिए कंप्यूटर आधारित अनुकूली परीक्षण उपकरणों का उपयोग करते हैं और अभिव्यक्ति और भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए ऑनलाइन चौट सुविधाओं को सक्षम करते हैं (कोलफन और केय, 2020)।

कार्यप्रणाली

इस गैर–अनुभवजन्य शोध ने महत्वपूर्ण अध्ययनों, व्यवस्थित समीक्षा और मेटा विश्लेषण के माध्यम से प्रासंगिक डेटा एकत्र किया। माध्यमिक स्रोत केंद्रीय पुस्तकालय की पुस्तकों, पत्रिकाओं और इंटरनेट से लिए गए थे। पाठ आलोचना, जीवनी संबंधी अध्ययनों की आलोचनात्मक परीक्षा, कथात्मक विश्लेषण, शोध पद्धति के रूप में रचनात्मक लेखन और इंटरनेट आधारित शोध जैसी उपयुक्त और प्रासंगिक शोध तकनीकों की सावधानीपूर्वक और गहन जांच इस कार्यप्रणाली में सहायक थी। प्रासंगिक और उपयुक्त पठन सामग्री भी एकत्र की गई और अकादमिक रूप से विचारपूर्वक विश्लेषण और मूल्यांकन किया गया और निष्कर्षों के महत्व का मूल्यांकन किया गया।

परिणाम और चर्चा

साहित्य की समीक्षा से पता चला है कि कुछ लोग सकारात्मक शिक्षण वातावरण बनाने पर बहुत अधिक जोर देते हैं। यद्यपि यह प्रक्रिया जटिल और पेचीदा है, लेकिन यह महत्वपूर्ण है। इस प्रकार, यह शोध महत्वपूर्ण है क्योंकि यह विद्वानों और शोधकर्ताओं को

प्रासंगिक जानकारी प्रदान करता है और सकारात्मक शिक्षण वातावरण बनाने की आवश्यकता की सराहना, मूल्यांकन और समझ प्रदान करता है। मौजूदा साहित्य का विश्लेषण निश्चित रूप से वर्तमान ज्ञान में योगदान देता है और सकारात्मक शिक्षण वातावरण बनाने की प्रक्रिया में शामिल होने के लिए दूसरों को प्रेरित करने, सक्रिय करने और प्रेरित करने के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है। यह कक्षा में विविधता, समानता और समानता के तत्वों को भी रेखांकित करता है। क्योंकि यह शोध पत्र शोध और शैक्षणिक परिदृश्य को समृद्ध और बढ़ाता है, यह शिक्षकों और उन सभी लोगों को सही और उचित दिशा में ले जा सकता है जो वास्तव में शिक्षा में रुचि रखते हैं। इसके अलावा, यह नीति निर्माताओं, गैर–सरकारी संगठनों और उन सभी लोगों को प्रोत्साहित और प्रेरित कर सकता है जो ईमानदारी से छात्रों के लिए सर्वश्रेष्ठ चाहते हैं ताकि वे सहायता प्रदान करने से न डरें।

निष्कर्ष

यह वास्तविक इच्छा है कि यह शोधपत्र जनता के मन और हृदय को प्रेरित करेगा ताकि वे महसूस कर सकें कि सकारात्मक शिक्षण वातावरण सभी के विकास और कल्याण के लिए आवश्यक है। इसके अलावा, यह कक्षा में विविधता, समानता और समानता को शामिल करता है। जनता को पूरी तरह से पता होना चाहिए कि सभी बच्चे आशा का स्रोत हैं और बेहतर समाज, राष्ट्र और वास्तव में बेहतर दुनिया के विकास के लिए प्रमुख कारक हो सकते हैं। इस गैर–अनुभवजन्य शोध ने सकारात्मक शिक्षण वातावरण की आवश्यकता को सटीक रूप से समझाने की कोशिश में जटिलता का पता लगाया। यह याद रखना चाहिए कि सकारात्मक वातावरण बनाना एक भौतिक स्थान से कहीं अधिक है। यह सहानुभूति रखने और सहानुभूति प्रदर्शित करने से कहीं अधिक है। यह प्रतिबद्ध होने की इच्छा व्यक्त करने से कहीं अधिक है। इसका मतलब है बच्चों के जीवन में गंभीरता से और पूरे दिल से शामिल होना। यह प्रक्रिया आसान नहीं है। यह मांगलिक, चुनौतीपूर्ण और समय लेने वाला है। इसके अलावा, शोधपत्र में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि सकारात्मक वातावरण बनाना शिक्षा का अभिन्न अंग है। अक्सर कार्यक्रम और पाठ्यक्रम ऐसे बनाए जाते हैं कि छात्रों के अनुकूल सकारात्मक वातावरण बनाने पर बहुत कम या कोई ध्यान नहीं दिया जाता। इसलिए, सरकारी संस्थानों, गैर–सरकारी संगठनों और शिक्षा और छात्रों की भलाई में रुचि रखने वाले सभी लोगों को हमेशा सार्थक संवाद में शामिल होना चाहिए। इस तरह वे सकारात्मक शिक्षण वातावरण बनाने की तत्काल आवश्यकता को स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं और उसकी सराहना कर सकते हैं। यह वास्तविक इच्छा है कि यह शोधपत्र जनता के दिलो–दिमाग को प्रेरित करेगा ताकि वे महसूस कर सकें कि छात्र सर्वश्रेष्ठ के हकदार हैं और उन्हें सकारात्मक वातावरण में अध्ययन करना चाहिए। बच्चे आशा का स्रोत हैं और बेहतर समाज, राष्ट्र और वास्तव में एक बेहतर दुनिया के विकास के लिए प्रमुख कारक हो सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. अल्पर्ट, एस., बीन, सी., इरविन, ए., और जंगल्स, ए. (2018)। संसाधन और प्रौद्योगिकी। कोलंबिया सीटीएल। https://ctl.columbia.edu/resources-and-technology/resources/ inclusive-teaching-guide/
2. एरियानी, डी., सुयातनो, और जुहैरी, एक्स., एम. (2021)। प्रिंसिपल का नवाचार और उद्यमशीलता नेतृत्व एक सकारात्मक शिक्षण वातावरण स्थापित करने के लिए। यूरोपीय जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 10(1), 63–74।
3. चेन, एल., बे, एस. आर., बैटिस्टा, सी., किन, एस., चेन, टी., इवांस, टी. एम., और मेनन, वी. (2018)। गणित के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण प्रारंभिक शैक्षणिक सफलता का समर्थन करता हैः व्यवहार संबंधी साक्ष्य और तंत्रिका–संज्ञानात्मक तंत्र। मनोवैज्ञानिक विज्ञान, 29(3),
4. कॉफलान, सी., और केय, टी. (2020)। निम्न और मध्यम आय वाले देशों में विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं और विकलांगताओं वाले शिक्षार्थियों का समर्थन करने के लिए शिक्षा प्रौद्योगिकी का उपयोग करना। सिमेंटिक स्कॉलर। https://doi.org/10.53832/edtechhub.0021
5. कॉर्बेट, टी., डुमरेक, सी., और टॉमसिनी, जे. (2021)। शैक्षिक संस्थानों में समावेशी अभ्यास। जर्नल ऑफ स्पेशल एजुकेशन, 1(6), 2–6
6. कॉस्टली, सी., नॉटिंघम, पी., और निकोलो–वाकर, ई. (2021)। उच्च शिक्षा में कार्य और सीखने के लिए समानता, विविधता और समावेशन। कार्य आधारित शिक्षण ई–जर्नल, खंड 10(2) कोहेन, एल., और हुपर्ट, जे. डी. (2018)। सकारात्मक भावनाएँ और सामाजिक चिंताः गर्व की अनूठी भूमिका। संज्ञानात्मक चिकित्सा और अनुसंधान, 42, 524–538। https://doi:10.1007/s10608-018-9900-2
7. डाल्टन, ई. एम. (2017)। सीखने के लिए सार्वभौमिक डिजाइनः डिजिटल और मीडिया साक्षरता क्षमता में बाधाओं को कम करने के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत। मीडिया साक्षरता शिक्षा जर्नल, 9(2), 17 https://doi.org/10.23860/jmle 2019-09-02-02
8. एर्टमर, पी., ए., और न्यूबी, टी., जे. (2013) व्यवहारवाद, संज्ञानवाद, रचनावादः एक अनुदेशात्मक डिजाइन परिप्रेक्ष्य से महत्वपूर्ण विशेषताओं की तुलना करना। प्रदर्शन सुधार त्रैमासिक, doi:10.1002/piq.2143
9. एर्टमर, पी., ए., और न्यूबी, टी., जे. (2013) व्यवहारवाद, संज्ञानवाद, रचनावादः एक अनुदेशात्मक डिजाइन परिप्रेक्ष्य से महत्वपूर्ण विशेषताओं की तुलना करना। प्रदर्शन सुधार त्रैमासिक, doi:10.1002/piq.2143
10. फ्रेंजेल, ए. सी., पेकरुन, आर., और गोएट्ज, टी. (2007)। अनुभव किया गया सीखने का वातावरण और छात्रों के भावनात्मक अनुभवः गणित कक्षाओं का एक बहुस्तरीय विश्लेषण। सीखना और निर्देश, 17, 478–493
11. फ्रेंजेल, ए. सी., पेकरुन, आर., और गोएट्ज, टी. (2007)। अनुभव किया गया सीखने का वातावरण और छात्रों के भावनात्मक अनुभवः गणित कक्षाओं का एक बहुस्तरीय विश्लेषण। सीखना और निर्देश, 17, 478–493
12. फ्यूएंटेस, एम., जेलया, डी., और मैडसेन, जे. (2021)। पाठ्यक्रम के पाठ्यक्रम पर पुनर्विचारः समानता, विविधता और समावेश को बढ़ावा देने के लिए विचार। मनोविज्ञान का शिक्षण, 48(1), 69–79।
13. लैडसन–बिलिंग्स, जी. (2014)। सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शिक्षाशास्त्र 2.0ः उर्फ रीमिक्स। हार्वर्ड एजुकेशनल रिव्यू, 84 (1), 74–84.